Shri Kaal Bhairav Ashtakam Lyrics

श्रीकालभैरवाष्टकम्

१.

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजम्।
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्॥
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥१॥

२.

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परम्।
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्॥
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥२॥

३.

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणम्।
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्॥
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥३॥

४.

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहम्।
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्॥
विनिक्वणन्मणिर्मुकुत्तशोभितांगरीश्वरम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥४॥

५.

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशनम्।

कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्॥
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांगमण्डलम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥५॥

६.

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं।
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्॥
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥६॥

७.

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिम्।
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम्॥
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥७॥

८.

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकम्।
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्॥
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिम्।
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥८॥

फलश्रुति

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरम्।
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्॥
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनम्।
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम्॥

॥श्री काल भैरव अष्टकम् समाप्त ॥